रात्रि क्लास 27/12/68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है ?

बच्चों का यह स्कूल है और रीलीजियोपोलिटिकल है। रीलिजन स्थापन कर रहे हैं, फिर पोलीटिकल। क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है फिर एड्यूकेशन स्प्रीचुअल सिखलाने वाला रूहानी बाप है। यह किसको मालूम नहीं है। स्प्रीचुअल कृष्ण को नहीं कहा जाता। ज्ञान का सागर निराकार बाप ही है। यह नई बातें बाप सुनाते हैं। मैं रीलिजन भी स्थापन करता हूँ। सद्गुरु भी हूँ। तुम्हारा बाप भी हूँ। सभी बाबा कहते हैं ना। गॉड फादर परम पिता कहते हैं। बाबा टीचर भी है। आते हैं सर्व की सद्गति करने। बच्चों को मंत्र मिलता है मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझो। नंगे आये थे। वहां से ही नंगे आते हैं। इसका मतलब यह नहीं वस्त्र नहीं पहनना है। नंगे अर्थात् शरीर नहीं है। आत्मा है। ड्रामा अनुसार स्थापना तो कल्प पहले मिसल होनी ही है। भल कितना भी हंगामा आदि हो। कलकत्ते में भी अखवार वाला बहुत उल्टा–सुल्टा लिखता था। हमने लिख दिया तुम डरते क्यों हो। उनको लिख दो कि निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सोय..... तो फिर शान्त कर देंगे। तुम बच्चों को सदैव शान्ति में रहना है। कोई कुछ बोले, क्रोध करे फूल चढ़ा दो। बोलो कुछ भी नहीं। बहुत अच्छा। तुम यह फूल चढ़ाओ, मैं तो यह फूल चढ़ाता हूँ। युक्तियां तो है ना। बाप रमजवाज भी है ना। सोनार भी है, वकील भी है, धोबी भी है। सभी कुछ है। डिपलोमट भी नम्बरवन है। तो तुम बच्चों को भी ऐसा बनना चाहिए। तो कोई बिगड़े ही नहीं। राझु रमजवाज कहा गया है। बाप रोज2 समझाते हैं। आत्मा का भी मालूम पड़ गया है। इनका पार्ट सभी से ऊँच है। इन्हों को बनाने वाला भी ऊँच ते ऊँच बाप है। किसको चेंज करने में कितनी रमज चाहिए। कोई की प्रश्न की दरकार ही नहीं। सभी कहते हैं हे! पतित पावन आकर पावन बनाओ। वही कहते हैं बच्चे मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। घड़ी–2 बुलाते हो। मेरा भी टाइम है ना। हमको पावन बनाना भी तब है जबकि नई दुनियाँ बननी है। नई दुनियां को पावन दुनियां कहा जाता है। इसलिये मैं आता ही हूँ पुरुषोत्तम संगम युग पर। यह ल0ना0 नई दुनियां के मालिक थे ना। हम जो ब्रह्मा के बच्चे हैं फिर देवता बनने वाले हैं। हम सो का मंत्र भी समझाया है। वह तो कह देते आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो हम आत्मा। यह मंत्र कितना अच्छा है। हम आत्मा सो इस समय ब्राह्मण फिर सो देवता सो क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे। फिर अभी ब्राह्मण बने हैं। देवता बनना है। यह तुम किसको भी समझा सकते हो। सीढ़ी का चित्र भी बनाया गया है। तुम बच्चे अच्छी रीत समझा सकते हो। बाबा ने समझाया है कृष्ण के चित्र में भी पूरा ज्ञान है। नई दुनियां और पुरानी दुनियां। यह स्वर्ग का मालिक था फिर नर्क का मालिक बना। सीढ़ी भी ऐसे ही है। ऊपर में स्वर्ग का मालिक है फिर नीचे उतरते हैं। सभी चित्रों का राज़ बुद्धि में आ जाता है। जैसे नक्शा होता है। पढ़े ही नहीं होंगे तो क्या (ब)ता सकेंगे फलाना शहर कहां है। इस पढ़ाई का भी तुमको ही पता है। कैसे धर्म स्थापन होते हैं। यह पढ़ाई है ना। इसमें भी जो जास्ती पढ़ते हैं। तो तुम सभी को टीचर बनना है। टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल होता है ना। तुम सभी टीचर्स हो। पढ़ाने वाला भी टीचर है। ब्राह्मण सभी को टीचर बनना है। किसको यह बताना है शिवबाबा को याद करते हो। सभी बच्चों को समझाओ यह शिवबाबा है। तो टीचर ठहरे ना। शिवबाबा स्वर्ग की बादशाही देते हैं इतना समझाया तो भी स्वर्ग में आ जावेंगे। प्रैक्टीस कराओ। ऊपर में शिवबाबा। उनसे ... .ह बादशाही मिलती है। ल0ना0 स्वर्ग के मालिक हैं ना। यह थोड़ा भी समझाया तो लायक बन जावेंगे। बच्चों का भी कल्याण करना है। इसमें कोई तकलीफ नहीं है। तुम भी बना सकते हो। छोटे बच्चे भी फिर बच्चों को कहेंगे शिवबाबा यह है। इन द्वारा शिवबाबा हमको ऐसा बनाते हैं। यह आत्मा बोलती है। यह भूलना न चाहिए। भूल जाते हैं तो बच्चों को भी सिखलाते नहीं। माया भुला देती है। वास्तव में बेहद के बाप का वरसा लेने लिये सभी हकदार हैं। छोटे बच्चे तो पवित्र हैं ही। उनको सहज हो सकता है। सिखलाते2 पक्के ..... जावेंगे, फिर भी स्वर्ग में तो आ जावेंगे ना। तुमको तो अभी बहुत काम करना है। सभी को समझाना सुख और शान्ति के सभी हकदार हैं। विनाश होगा तुम तो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार आ जावेंगे बाकी मुक्तिधाम

में चले जावेंगे। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी घराना यहां ही बनना है। तुम बच्चे विश्व की सद्गति करते हो। तुम बच्चों को अन्दर में कितनी खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। तुम्हीं गोप–गोपियां हो। सतयुग में कृष्ण के आगे गोप–गोपियां नहीं होते हैं। ग्लानि कितनी कर दी हैं। उनके चरित्र में यह नहीं सिद्ध करते हैं राधे और कृष्ण क्या कुमार ही रहे या बड़े भी हुये हैं। सदैव मिडग्रेड ही दिखाते हैं। बटुक कहा जाता है ना। चन्द्रकान्त वेदान्त में बटूक महाराज का है। अभी तुम जानते हो। तुम बच्चों को खुशी कितनी रहनी चाहिए। परछाया क्यों पड़ना चाहिए। स्थायी खुशी क्यों नहीं रहती है। जानते हो बाबा के हम बने हैं इतना ऊँच पद हम पावेंगे। गाया जा(ता) है सेकण्ड में जीवनमुक्ति। जो भी अच्छे बच्चे हैं बाप कहते हैं ना आज नर्कवासी हो कल स्वर्गवासी बनेंगे। तुम्हारी बुद्धि में स्वर्ग याद है। आज हम नर्क में हैं कल स्वर्ग में होंगे। क्रिमनल आई को बदलने लिये पुरूषार्थ करना है हम आत्मा हैं। हम भाई2 सभी जावेंगे घर। बाबा आया हुआ है लेने लिये। बाप ने इसमें प्रवेश किया है। देह का अहंकार तोड़वाकर ले जाते हैं। अभी हमको यह कपड़े बदलनी है। हम जाते हैं घर। वहां तुम नंगे रह जाते हो फिर स्वर्ग में नये कपड़े पहनेंगे। वह है ही सोने की दुनियां। स्वर्ग में तुम्हारे सिवाय और कोई आ न सके और किसको न यह नालेज है न स्वर्ग में आते हैं। अभी तुम समझाते हो यह पैराडाइज स्थापन हो रहा है। तुम जानते हो स्वर्ग बनता कैसे है। नर्क फिर गुम कैसे हो जाता है। नाम–निशान गुम। फिर द्वापर में तुमको मालूम पड़ता है। संगम युग पर तुम सभी कुछ जानते हो। अपने से बात करो हम कल क्या करते थे आज क्या करते हैं। हरेक बच्चा विचार–सागर–मंथन करे तो बाप मिसल तुम भी समझा सकते हो। कोई भी बात में मुंझो तो ब्राह्मणी से पूछो। ब्राह्मणी भी मुंझती है तो बड़ी ब्राह्मणी के पास। बड़ी ब्राह्मणी न समझा सके तो फिर बाबा बैठा है। बाप कहेंगे बाप को जानते हो। अच्छा बाप को याद करो तो पावन बनकर स्वर्ग में चले जावेंगे। (बा)प से वरसा मिलता है ना। बाकी और क्या चाहिए। मुरली रेगुलर पढ़ता रहेगा तो घुटका खाना भी मिट जावेंगा। (कहेंगे) बाबा ने मुरली बड़ी अच्छी चलाई। बच्चों को कुछ भी पूछने की दरकार नहीं रहती है। बेहद के बाप से बेहद का वरसा लेना है। जैसे लौकिक बाप का बच्चा पैदा हुआ और कहेंगे यह वारस है। हम आत्माएं भी उस (बा)प के बच्चे हैं बाप नई दुनियां की स्थापना करने वाला है। जो अच्छी रीत पुरूषार्थ करेंगे वह अच्छा पद पावेंगे पढ़ाई अनुसार पद मिलता है। इस पढ़ाई से तुम कितना समझदार बनते हो। तब तो ऊंच पद सभी पवित्रता की बात है। पवित्रता है तो सुख–शान्ति भी है। उनको सतयुग सुखधाम कहा जाता है। स..... टीचर बनना है जरूर। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडनाइट और नमस्ते।